Maa Kamakhya Mantra Sadhana

माँ कामाख्या मंत्र–साधना

GURUDEV RAJ VERMA

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

प्राचीन् काल में जब भगवान् शिव सती के वियोग में विलाप करते हुए उनका शरीर लेकर घूम रहे थे, तब विष्णुजी ने सुदर्शनचक्र से सती के शरीर को खण्ड-खण्ड कर दिया, जिससे महादेव का मोह भंग हो सके। उनके शरीर के दिव्य अंग जहां-जहां गिरे, वहां-वहां आदिशक्ति के वह दिव्य अंग सिद्ध पीठों के रूप में अवतरित हो गये। जहां भगवती सती का योनि भाग गिरा वह स्थान 'कामाख्या' नाम से प्रसिद्ध हुआ। प्रत्येक सिद्धपीठों में भगवान् शिव भैरवरूप में शिवा के साथ स्थापित हो गये। शिव ने देवताओं से कहा- 'जो मनुष्य भक्तिपूर्वक इन दिव्य स्थानों पर 'शक्ति' की उपासना करेंगे, वह मनुष्य मनोवांछित फल प्राप्त करेंगे। इन सभी स्थानों पर मैं 'भैरव' रूप में शिवा के साथ निवास करुंगा। इसलिये सभी सिद्ध पीठों पर किया गया जप एवं पुरश्चरण त्वरित फल प्रदान करेगा।' असम गुहावटी में 'कामाख्या'

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

क्षेत्र पर भगवती योनि पीठ में स्थापित हैं तथा इनके भैरव 'उमानन्द' हैं।

'कामाख्या' पीठ को सर्व सिद्ध पीठों में सर्वश्रेष्ठ कहा गया है, इसलिये इस तेजस्वनी शक्ति पीठ पर तांत्रिक व विद्वान लोग अनेंको प्रकार के तंत्रानुष्ठान करते हैं। यह महामाया का ऐसा जाग्रत स्थान है जहां आज भी प्रतिवर्ष भगवती रजस्वला होती हैं। उस समय सभी प्रमुख देवता उस स्थान पर आकर, वहीं पर्वत श्रेणियों में निवास करते हैं। उस समय वहां की सम्पूर्ण भूमि देवोमयीं हो जाती है। माँ कामाख्या आदि शक्ति का दिव्य स्वरूप है जिनकी विधिपूर्वक आराधना करने से मनुष्य चारों पुरुषार्थों को सहज ही प्राप्त करता है। इस स्थान पर 'तंत्रानुष्ठान' एवं 'कन्या-पूजन' का विशेष महत्त्व है। इसलिये तंत्रानुष्ठान में नित्य कन्या पूजन एवं भोजन का आयोजन करना महाफलदायी होता है। माण्डूक्य उपनिषद में इनको ब्रह्म की संज्ञा देकर कहा गया है कि- 'वह सर्वेश्वर है, वह सर्वज्ञ है, वह अन्तर्यामी है, वह सबको उत्पन्न करने का स्थान योनि है। समस्त प्राणियों की उत्पत्ति, स्थिति और लय का स्थान भी वही है।'

भगवान् उवाच- चूंकि देवी काम के लिये मेरे साथ महान नीलकूट पर्वत पर आयी और एकान्त में चली गयी इसलिये वह 'कामाख्या' कही जाती हैं। वह कामदा, कामिनी, कामकला, कामा,

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

कान्ता, कामांगदायिनी, कामांगनाशिनी हैं इसलिये इन्हें 'कामाख्या' कहा गया है।

संक्षिप्त पूजा विधि- साधक सर्वप्रथम समर्थ गुरु से दीक्षा ग्रहण कर साधना सम्बन्धित समस्त आवश्यक जानकारी एवं विधान प्राप्त कर ले। तत्पश्चात् शुभकाल में स्नानादि कर शुद्धवस्त्र धारणकर कार्यानुसार दिशा की ओर मुख कर आसन पर भगवती के समक्ष बैठ जाये। श्रीकामाख्या प्रतिमा अथवा यंत्र का अभाव हो तो भगवती दुर्गा, गौरी, काली, पार्वतीजी अथवा शिवलिंग के समक्ष कामाख्याजी की साधना सम्पन्न की जा सकती है। दीपक प्रज्जवलित करते हुए भगवान् भैरव का ध्यान करें एवं साधना में निर्विघ्नता के लिये उनसे प्रार्थना करें। अक्षत् पुष्प चढ़ायें तथा जल से हाथ धो लें। अब मुखशुद्धि के लिये निम्न मंत्रों से आचमन करें-

ॐ केशवाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। तत्पश्चात् हाथ धोयें- हृषीकेशाय नमः।

इसके बाद देह एवं स्थान शुद्धि हेतु निम्न मंत्र के द्वारा अपने चारों ओर जल छिड़के-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

इसके बाद आसन के नीचे पूर्वादिक भाग में त्रिकोण मण्डल बनाकर निम्न मंत्रों द्वारा पृथ्वी आसन पूजन करें-

ॐ ह्रीं आधारशक्तये नमः, ॐ कूर्मायै नमः, ॐ अनन्ताय नमः, ॐ पृथिव्यै नमः।

तत्पश्चात् उस त्रिकोण का स्पर्श करते हुए भूमि प्रार्थना करें- ॐ पृथ्वि! त्वया धृतालोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु च आसनम्।।

मंत्रोच्चारण के साथ भूमि व आसन पर पुष्प-अक्षत अर्पित कर धूप दीपक दिखाये। तदोपरान्त् गुरु एवं गणेश का ध्यान व पूजन करते हुए भगवती के आंचल में बैठकर साधनारम्भ करें।

कामाख्या मंत्र विनियोग- ॐ अस्य श्री कामाख्या मंत्रस्य परमेष्ठि ऋषिः, गायत्री छन्दः, त्रिपुराख्या देवता मम सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

बीजमंत्र से षडंगन्यास कर भगवती का ध्यान करें-

ध्यानम्- अतिसुललितवेशां हास्यवक्त्रां त्रिनेत्रां, जितजलदसुकान्तिं पटट्वस्त्रांप्रकाशाम्। अभयवरकराढ्यां रत्नभूषतिभव्याम्, सुरतरुतलपीठे रत्नसिंहासनस्थाम्।। हरिहरविधिवन्द्यां

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

शुद्धबुद्धिस्वरूपाम्, मदनशरसमाक्तां कामिनीं कामदात्रीम्। निखिलजनविलासां कामरूपां भवानीम्, कलिकलुषनिहन्त्रीं योनिरूपां भजामि।।

ध्यानोपरान्त् साधक सामर्थ्यानुसार उत्तम सामग्रियों द्वारा भक्तिभाव से भगवती का पूजन करें। स्थूल सामग्रियों के अभाव में भगवती का मानसिक भाव से पूजन करें।

मानसपूजन- ॐ लं पृथ्वी तत्त्वात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाश तत्त्वात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। ॐ यं वायु तत्त्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नि तत्त्वात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। ॐ वं अमृततत्त्वात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। ॐ सौं सर्वतत्त्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

पूजन उपरान्त् इस दृढ़ भावना के साथ कि- मेरे गुरु, मंत्र और देवता से श्रेष्ठ कोई नहीं हैं और मेरा मंत्र अवश्य सिद्ध होगा, जपारम्भ करें।

बीजमंत्र- 'क्षौं।'

त्र्यक्षर मंत्र- 'त्रीं त्रीं त्रीं।'

मूलमंत्र- 'क्षौं ॐ ॐ वषट् ठः ठः।'

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

षड्क्षर मंत्र– 'ॐ कामाक्ष्यै नमः।'

शत्रुनाशन मंत्र– 'ॐ नमः कामाक्ष्यै अमुकस्य हन हन स्वाहा।'

श्रीकामाख्या गायत्री– 'ॐ कामाक्ष्यै विद्महे भगवत्यै धीमहि तन्नो गौरी प्रचोद्यात्।'

सर्वसिद्धिदायक कामाख्या मंत्र– विनियोग– ॐ अस्य श्रीकामाख्या मंत्रस्य अक्षोभ्य ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीकामाख्या देवता सर्वसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

मंत्र– 'ॐ त्रीं त्रीं त्रीं हूँ हूँ स्त्रीं स्त्रीं कामाख्ये प्रसीद त्रीं त्रीं त्रीं हूँ हूँ स्त्रीं स्त्रीं स्वाहा।'

तंत्रग्रन्थों में यह मंत्र अत्यन्त दुर्लभ है। इस मंत्र के प्रभाव से समस्त महापापों का नाश एवं असाध्य कार्य साध्य होते हैं। स्वर्गलोक, पाताललोक एवं मृत्युलोक में जितनी सिद्धियां हैं वे सब साधकों की सेवा करती हैं।

काम्य प्रयोग एवं होम द्रव्य– मंत्र जाग्रति हेतु विधिवत् एक लाख जप करें। पुरश्चरण में मंत्र के जितने अक्षर होते हैं उतने लाख जप किये जाते हैं। पुरश्चरण से ही पूर्ण लाभ एवं महासिद्धि मिलती है। अतः प्रयत्नपूर्वक गुरु के मार्गदर्शन में पुरश्चरण सिद्धि अवश्य करें। मंत्र जप की संख्या का दशांश हवन, हवन का

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन एवं मार्जन का दशांश कन्या भोजन करवाया जाता है। इस विधि से मंत्र को सिद्ध करने पर मंत्र कवच की भांति सदैव साधक की रक्षा करता है एवं सर्व आवश्यक कार्यों को सिद्ध करता है।

☆ श्मशान में रक्षा बन्धन करते हुए आग्नेय कोण में शत्रु को केन्द्रित करते हुए जप करने से तत्काल शत्रु का संहार होता है।

☆ प्रातःकाल सूर्योदय के समय सूर्य के समक्ष बैठकर जप करने से एक माह में असाध्य रोगों का दमन होता है।

☆ बिल्ववृक्ष के मूल में शिवजी का पूजन करते हुए श्रीसूक्त से मंत्र को सम्पुटित कर जप करने से घोर दरिद्रता का विनाश होता है।

☆ शनिवार के दिन पीपल के मूल में बैठकर दस हजार जप करने से भौतिक रोग तथा अभिचारिक कर्म समाप्त होते हैं।

☆ गुरुच खण्ड को दूध में भिगोकर होम करने से समस्त व्याधियां एवं रोग समाप्त होते हैं।

☆ बिल्व की समिधा से बेलगिरि के टुकड़ों, पत्रों एवं पुष्पों को घृत में भिगोकर होम करने से महालक्ष्मी का आगमन होता है।

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

कमल पुष्पों को घृत में भिगोकर होम करने से भी महाधन प्राप्त होता है।

✯ त्रिमधु युक्त लाजा होम करने से कन्या एवं पुरुष का शीघ्र विवाह होता है। दूध की आहुति मेधा एवं घृत की आहुति बुद्धि का विकास करती है।

✯ मौन रहते हुए निराहार रहकर तीन दिन और तीन रात में भगवती का मंत्र जप करने से साधक यमपाश से मुक्त हो जाता है।

✯ जल में खड़े होकर देवी के मंत्र का उच्चारण करते हुए जो नित्य अजंलि से अपने ऊपर जल डालता है, वह ज्ञान, आरोग्यता एवं दीर्घ आयु प्राप्त करता है।

✯ एक पैर पर खड़े होकर ऊर्ध्वबाहु होकर– श्वास रोकते हुए प्रतिदिन तेरह सौ मन्त्रों का एक मास तक जप करने से सर्व कामनाएं पूर्ण होती हैं। इसी प्रकार रात में केवल खीर ग्रहण करते हुए एक वर्ष तक जप करने वाला पुरुष सिद्ध 'ऋषि' हो जाता है। इसी प्रकार दो वर्ष तक जप करने से वाक्सिद्धि प्राप्त होती है। तीन वर्ष तक जप करने वाला साधक त्रिकालदर्शी हो जाता है। चार वर्ष तक जप करने वाले साधक को भगवान् सूर्य दर्शन देकर वर प्रदान करते हैं। पांच वर्ष तक जप करने से साधक अणिमादि

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

सिद्धियों का स्वामी हो जाता है। छः वर्षों तक जप करने से साधक में इच्छानुसार रूप धारण करने की शक्ति आ जाती है। सात वर्षों तक जप करने से 'देवत्व' नौ वर्षों तक जप करने से 'मनुत्व' तथा दश वर्षों तक जप करने से 'इन्द्रत्व' प्राप्त होता है। ग्यारह वर्षों तक जप करने से 'प्रजापति' तथा बारह वर्षों तक जप करने वाला मनुष्य साक्षात् 'ब्रह्मा' के समान हो जाता है। कामाख्या–तंत्र वह कल्पवृक्ष है, जिससे मनुष्य सर्वाभीष्ट सिद्ध कर सकता है।

पूजनार्चन फल– भगवती के विग्रह को भक्तिमय पंचामृत से स्नान कराने वाला मनुष्य भगवती के सायुज्य को प्राप्त करता है एवं शान्ति पुष्टि दोनों का लाभ होता है। जो मनुष्य लाल गन्ने के रस से भरे हुए सैकड़ों कलशों से भगवती को स्नान कराता है, वह आवागमन से रहित हो जाता है। जो मनुष्य आम, मुनक्का अथवा अंगूर के रस से देवी का अभिषेक करता है, वह देवीलोक को जाता है। जो पुरुष कपूर, केसर, अगरु, कस्तूरी, कमल अथवा अन्य सुगन्धित पुष्पों के सुवासित जल से भगवती को स्नान कराता है, उसके सैकड़ों जन्मों के पापकर्म स्वाहा हो जाते हैं। जो दूध भरे कलश से देवी को स्नान कराता है वह क्षीर सागर में निवास करता हैं। दही से स्नान कराने से दधिसागर या

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

दधिकुण्ड का अधिपत्य प्राप्त होता है। त्रिमधु से स्नान कराने से वशीकरण कार्य में सफलता तथा परम सौभाग्यागमन होता है। सहस्रों कलशों से देवी को स्नान कराने से परमसुख की प्राप्ति तथा अन्त में परमधाम प्राप्त होता है। सुन्दर रेशमी वस्त्र अर्पित करने से वायुलोक में स्थान प्राप्त होता है। रत्ननिर्मित भूषण अर्पण करने से धनधान्य का विशेष लाभ होता है। भगवती के मस्तक पर चन्दन तथा कस्तूरी की बिन्दी लगाने से इन्द्रासन प्राप्त होता है।

उत्तम फल एवं सुगन्धित पुष्प चढ़ाने वाला मनुष्य अन्त में कैलास में सुखपूर्वक निवास करता हैं। बिल्वपत्र अर्पित करने से सर्वक्लेश शान्त होते हैं तथा महादेव का आशीष प्राप्त होता है। बिल्वपत्र पर रक्त चन्दन से स्पष्ट अक्षरों में 'क्षौं' लिखकर, 'क्षौं ॐ ॐ वषट् ठः ठः' मंत्र से महामाया कामाख्या के श्रीचरणों में अर्पित करने वाला मनुष्य राजराजेश्वर होता है। इसी प्रकार एक करोड़ बिल्वपत्र देवी को अर्पित करने वाला मनुष्य ब्रह्माण्ड का अधिपति हो जाता है। इसी प्रकार ऋतुनुसार सुन्दर रूप वाले, गुण वाले, सुगन्ध वाले स्वादिष्ट फल एवं पुष्पों के द्वारा सदैव भगवती की पूजा करनी चाहिये। सैकड़ो तथा हजारों दीपक प्रज्जवलित कर भगवती को अर्पित करने से सूर्यलोक की प्राप्ति होती है। इस प्रकार पूजन उपरान्त् अन्त में प्रचुरमात्रा में देवी को गंगाजल अर्पित करें। कपूर

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

तथा नारियल युक्त कलश जल भी देवी को भेंट रूप में दें। तत्पश्चात् मुखशुद्धि के लिये भगवती को ताम्बूल, लौंग, इलायची आदि अर्पण करें। इसके बाद वाद्यों की ध्वनि से लयपूर्वक स्तोत्र, मंत्र, चालीसा, पुराण, प्रार्थना, आरती एवं स्तुति से भगवती को संतुष्ट करें। जैसा समय एवं प्रबन्धन हो उसी के अनुसार भगवती का भजन करें। तदोपरान्त् श्रद्धामय माता भगवती को छत्र, चंवर एवं अन्य उपहार अर्पण करते हुए भगवती को बारम्बार नमस्कार करते हुए उनसे क्षमा याचना करें। तंत्रोक्त एवं विधिवत् मंत्रानुष्ठान करने वाला मनुष्य संसार में सर्वसुखों का अधिकारी होता है।

श्रीकामाख्या कवचम्- ॐ कामाख्याकवचस्य मुनिर्बृहस्पतिः स्मृतः। देवी कामेश्वरी तस्य अनुष्टुप्छन्द इष्यते।।

विनियोगः सर्व्वसिद्धौ तंच शृण्वन्तु देवताः। शिरः कामेश्वरि देवी कामाख्या चक्षुषी मम।।

शारदा कर्णयुगलं त्रिपुरा वदनं तथा। कण्ठे पातु महामाया हृदि कामेश्वरि पुनः।।

कामाख्या जठरे पातु शारदा पातु नाभितः। त्रिपुरा पाश्वर्योः पातु महामाया तु मेहने।।

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

गुदे कामेश्वरी पातु कामाख्योरुद्वये तु माम्। जानुनीः शारदा पातु त्रिपुरा पातु जंघयोः।।

महामाया पादयुगे नित्यं रक्षतु कामदा। केशे कोटेश्वरी पातु नासायां पातु दीर्घिका।।

(शुभगा) दन्तसंघाते मातंग्यवतु चांगयोः। बाह्वोर्म्मां ललिता पातु पाण्योस्तु वनवासिनी।।

विन्धयवासिन्यंगुलीषु श्रीकामा नखकोटिषु। रोमकूपेषु सर्व्वेषु गुप्तकामा सदावतु।।

पादांगुलिपार्ष्णिभागे पातु मां भुवनेश्वरी। जिह्वायां पातु मां सेतुः कः कण्ठाभ्यन्तरेऽवतु।।

पातु नश्चान्तरे वक्षः ईः पातु जठरान्तरे। सामिन्दुः पातु मां वस्तौ विन्दुर्व्विद्वन्तरेऽवतु।।

ककारस्त्वचि मां पातु रकारोऽस्थिषु सर्व्वदा। लकारः सर्व्वनाडिषु ईकारः सर्व्वसन्धिषु।।

चन्द्रः स्नायुषु मां पातु विन्दुर्मज्जासु सन्ततम्। पूर्व्वस्यां दिशि चाग्नेय्यां दक्षिणे नैर्ऋते तथा।।

वारुणे चैव वायव्यां कौवरे हरमन्दिरे। अकाराद्यास्तु वैष्णवा अष्टौ वर्णास्तु मंत्रगाः।।

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

पान्तु तिष्ठन्तु सततं समुद्भवविवृद्धये। ऊर्ध्वाधः पातु सततं मान्तु सेतुद्वयं सदा।।

नवाक्षराणि मन्त्रेषु शारदा मंत्रगोचरे। नवस्वरास्तु मां नित्यं नासादिषु समन्ततः।।

वातपित्तकफेभ्यस्तु त्रिपुरायास्तु त्र्यक्षरम्। नित्यं रक्षतु भूतेभ्यः पिशाचेभ्यस्तथैव च।।

तत् सेतु सततं पाता क्रव्याद्भ्यो मान्निवारकौ। नमः कामेश्वरी देवीं महामायां जगन्मयीम्।।

या भूत्वा प्रकृतिर्नित्यं तनोति जगदायतम्। कामाख्यामक्षमाला भयवरदकरां सिद्धसूत्रैकहस्तां।।

श्वेतप्रेतोपरिस्थां मणिकनकयुतां कुंकुमापीतवर्णाम्। ज्ञानध्यानप्रतिष्ठा मतिशयविनयां ब्रह्मशक्रादिवन्द्या।।

मग्नौ विन्द्वन्तमन्त्रप्रियतमविषयां नौमि विद्धयैरतिस्थाम्। मध्ये मध्यस्थ भागे सततविनमिता भावहारावली या लीला लोकस्य कोष्ठे सकलगुणयुता व्यक्तरूपैकनम्रा।।

विद्या विद्यैकशान्ता शमनशमकरी क्षेमकर्त्री वरास्या। नित्यं पायात् पवित्रप्रणववरकरा कामपूर्व्वेश्वरी नः।।

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

इति हरः कवचं तनुकेस्थितं शमयति व्यतिक्रम्य शिवे यदि। इह गृहाण यतस्व विमोक्षणे सहित एष विधिः सह चामरैः।।

इतीदं कवचं यस्तु कामाख्यायाः पठेद् बुधः। सुकृत् तं तु महादेवी तनु व्रजति नित्यदा।।

नाधिव्याधिभयं तस्य न क्रव्याद्भ्यो भयं तथा। नाग्नितो नापि तोयेभ्यो न रिपुभ्यो न राजतः।।

दीर्घायुर्बहुभोगी च पुत्रपौत्रसमन्वितः। आवर्त्तयन् शतं देवी मन्दिरे मोदते परे।।

यथा तथा भवेद् बद्धः संग्रामेऽन्यत्र वा बुधः। तत्क्षाणदेव मुक्तः स्यात् स्मरणात् कवचस्य तु।।

श्रीकामाख्या स्तोत्रम्- जय कामेशि चामुण्डे जय भूतापहारिणी। जय सर्वगते देवि कामेश्वरि नमोऽस्तुते।।

विश्वमूर्ते शुभे शुद्धे विरूपाक्षि त्रिलोचने। भीमरूपे शिवे विद्ये कामेश्वरि नमोऽस्तुते।।

मालाजये जये जम्भे भूताक्षि क्षुभितेऽक्षये। महामाये महेशानि कामेश्वरि नमोऽस्तुते।।

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

भीमाक्षि भीषणे देवि सर्व्वभूत क्षयंकरि। कालि विकरालि च कामेश्वरि नमोऽस्तुते।।

कालि कराल विक्रान्ते कामेश्वरि हरप्रिये। सर्व्वशास्त्रसारभूते कामेश्वरि नमोऽस्तुते।।

कामरूपप्रदीपे च नीलकूट निवासिनि। निशुम्भ शुम्भमथनी कामेश्वरि नमोऽस्तुते।।

कामाख्ये कामरूपस्थे कामेश्वरि हरिप्रिये। कामनां देहि में नित्यं कामेश्वरि नमोऽस्तुते।।

वपानाढ्य महावक्त्रे त्रिभुवनेश्वरि। महिषासुरवधे देवि कामेश्वरि नमोऽस्तुते।।

छागतुष्टे महाभीमे कामाख्ये सुरवन्दिते। जय कामप्रदे तुष्टे कामेश्वरि नमोऽस्तुते।।

भ्रष्टराज्यो यदा राजा नवम्यां नियतः शुचिः। अष्टम्यांच चतुर्द्दश्यामुपवासी नरोत्तमः।।

संवत्सरेण लभते राज्यं निष्कण्टकं पुनः। य इदं शृणुयाद् भक्त्या तव देवि समुद्भवम्।।

सर्वपापविनिर्म्मुक्तः परं निवार्णमृच्छति। श्रीकामरूपेश्वरि भास्करप्रभे, प्रकाशिताम्भोजनिभायताानने।।

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

सुरारिरक्षः स्तुतिपातनोत्सुके त्रयीमये देवनुते नमामि। सितासिते रक्तपिशंगविग्रहे, रूपाणि यस्याः प्रतिभान्ति तानि।।

विकाररूपा च विकल्पितानि, शुभाशुभनामपि तां नमामि। कामरूपसमुद्भूते कामपीठावतंसके।।

विश्वाधारे महामाये कामेश्वरि नमोऽस्तुते। अव्यक्त विग्रहे शान्ते सन्तते कामरूपिणि।।

कालगम्ये परे शान्ते कामेश्वरि नमोऽस्तुते। या सुषुम्नान्तरालस्था चिन्त्यते ज्योतिरूपिणी।।

प्रणतोऽस्मि परां वीरां कामेश्वरि नमोऽस्तुते। दंष्ट्राकरालवदने मुण्डमालोपशोभिते।।

सर्व्वतः सर्वगे देवि कामेश्वरि नमोऽस्तुते। चामुण्डे च महाकालि कालि कपालहारिणि।।

पाशहस्ते दण्डहस्ते कामेश्वरि नमोऽस्तुते। चामुण्डे कुलमालास्ये तीक्ष्णदंष्ट्रे महाबले।। शवयानस्थिते देवि कामेश्वरि नमोऽस्तुते।

प्रार्थना श्लोका– जय कामेशि चामुण्डे जय भूतापहारिणी। जय सर्वगते देवि कामेश्वरि नमोऽस्तुते।।

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

नमो देविमहाविद्ये! सृष्टिस्थित्यन्त कारिणी। नमः कमल पत्राक्षि! सर्वाधारे नमोऽस्तुते।।

सविश्वतैजसप्राज्ञ वराट् सूत्रात्मिके नमः। नमो व्याकृतरूपायै कूटस्थायै नमो नमः।।

कामाक्ष्ये सर्गादिरहिते दुष्टसंरोधनार्गले। निरर्गल प्रेमगम्ये! भर्गे देवि! नमोऽस्तुते।।

नमः श्री कालिके! मातर्नमो नील सरस्वती। उग्रतारे महोग्रे ते नित्यमेव नमो नमः।।

छिन्नमस्ते! नमस्तेऽस्तु क्षीरसागर कन्यके। नमः शाकम्भरि शिवे! नमस्ते रक्तदन्तिके।।

निशुम्भ शुम्भदलनि! रक्तबीज विनाशिनी। धूम्रलोचन निर्णासे! वृत्रासुरनिबर्हिणीं।।

चण्डमुण्ड प्रमथिनी! दानवान्त करे शिवे। नमस्ते विजये गंगे शारदे! विकटानने।।

पृथ्वीरूपे दयारूपे तेजोरूपे! नमो नमः। प्राणरूपे महारूपे भूतरूपे! नमोऽस्तुते।।

विश्वमूर्ते दयामूर्ते धर्ममूर्ते नमो नमः। देवमूर्ते ज्योतिमूर्ते ज्ञानमूर्ते नमोऽस्तुते।।

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

कामाख्यै काम रूपस्थे कामेश्वरी हरप्रिये। कामांश्च देहि मे नित्यं कामेश्वरि नमोऽस्तुते।।

। श्रीकामाख्या चालीसा ।

दोहा– सुमिरन कामाख्या करुँ, सकल सिद्धि की खानि। होइ प्रसन्न सत करहु माँ, जो मैं कहौं बखानि।।

चालीसा– जै जै कामाख्या महारानी। दात्री सब सुख सिद्धि भवानी।।

कामरूप है वास तुम्हारो। जहँ ते मन नंहि टरत है टारो।।

ऊँचे गिरि पर करहुँ निवासा। पुरवहु सदा भगत मन आसा।।

ऋद्धि सिद्धि तुरतै मिलि जाई। जो मन ध्यान धरै मनलाई।।

जो देवी का दर्शन चाहे। हृदय बीच याही अवगाहे।।

प्रेम सहित पण्डित बुलावावे। शुभ मुर्हत निश्चित विचरावे।।

अपने गुरु से आज्ञा लेकर। यात्रा विधान करे निश्चय धर।।

पूजन गौरि गणेश करावे। नान्दीमुख भी श्राद्ध जिमावे।।

शुक्र को बाँयें व पाछे कर। गुरु अरु शुक्र उचित रहने पर।।

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

जब सब ग्रह होवें अनुकूला। गुरु पितु मातु आदि सब हूला।।

नौ ब्राह्मण बुलवाय जिमावे। आशीर्वाद जब उनसे पावे।।

सबहिं प्रकार शकुन शुभ होई। यात्रा तबहिं करे सुख होई।।

जो चह सिद्धि करन कछु भाई। मंत्र लेइ देवी कहँ जाई।।

आदरपूर्वक गुरु बुलावे। मंत्र लेन हित दिन ठहरावे।।

शुभ मुहूर्त में दीक्षा लेवे। प्रसन्न होई दक्षिणा देवे।।

का नमः करे उच्चारण। मातृका न्यास करे सिर धारण।।

षडंग न्यास करे सो भाई। माँ कामक्षा धर उर लाई।।

देवी मंत्र करे मन सुमिरन। सन्मुख मुद्रा करे प्रदर्शन।।

जिससे होई प्रसन्न भवानी। मन चाहत वर देवे आनी।।

जबहिं भगत दीक्षित होइ जाई। दान देय ऋत्विज कहँ जाई।।

विप्रबंधु भोजन करवावे। विप्र नारि कन्या जिमवावे।।

दीन अनाथ दरिद्र बुलावे। धन की कृपणता नहीं दिखावे।।

एहि विधि समझ कृतारथ होवे। गुरु मंत्र नित जप कर सोवे।।

देवी चरण का बने पुजारी। एहि ते धरम न है कोई भारी।।

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

सकल ऋद्धि-सिद्धि मिल जावे। जो देवी का ध्यान लगावे।।

तू ही दुर्गा तू ही काली। माँग में सोहे मातु के लाली।।

वाक् सरस्वती विद्या गौरी। मातु के सौहें सिर पर मौरी।।

क्षुधा, दुरत्यया, निद्रा तृष्णा। तन का रंग है मातु का कृष्णा।।

कामधेनु सुभागा और सुन्दरी। मातु अंगुलिया में है मुंदरी।।

कालिरात्रि वेदगर्भा धीश्वरि। कंठमाला माता ने ले धरि।।

तृषा सती एक वीरा अक्षरा। देह तजी जनु रही नश्वरा।।

स्वरा महा श्री चण्डा। मातु न जाना जो रहे पाखण्डी।।

महामारी भारती आर्या। शिवजी की ओ रहीं भार्या।।

पद्मा, कमला, लक्ष्मी, शिवा। तेज मातु तन जैसे दिवा।।

उमा, जयी, ब्राह्मी भाषा। पुरवंहि भगतन की अभिलाषा।।

रजस्वला जब रूप दिखावे। देवता सकल पर्वतहिं जावें।।

रूप गौरि धरि करहिं निवासा। जब लग होइ न तेज प्रकाशा।।

एहि ते सिद्ध पीठ कहलाई। जउन चहै जन सौ होई जाई।।

जो जन यह चालीसा गावे। सब सुख भोग देवि पद पावे।।

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

होहिं प्रसन्न महेश भवानी। कृपा करहु निज जन अस वानी।।

दोहा- कहें गोपाल सुमिर मन, कामाख्या सुख खानि।

जग हित माँ प्रगटत भई, सके न कोऊ खानि।।

। श्रीकामाक्षायाष्टक ।

एक समय यज्ञ दक्ष कियो तब न्योत सबै जग के सुर डारो।

ब्रह्म सभा बिच माख लग्य तेहि कारण शंकर को तजिडारो।

रोके रुके नहिं दक्ष सुता, बुझाय बहू विधि शंकर हारो।

नाम तेरो बड़ा है जग में करुणा करके मम कष्ट निवारो।1।

संग सती गण भेज दिये, त्रिपुरारि हिये मँह नेक विचारो।

राखे नहीं संग नीक अहै जो रुके तो कहूँ नहिं तन तजि डारो।

जाय रुकी जब तात गृहे तब काहु न आदर बैन उचारो।

नाम तेरो बड़ा है जग में करुणा करके मम कष्ट निवारो।2।

मातु से आदर पाय मिली भगिनी सब व्यंग मुस्काय उचारो।

तात न पूछ्यो बात कछू यह भेद सती ने नहीं विचारो।

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

जाय के यज्ञ में भाग लख्यो पर शंकर भाग कतहुँ न निहारो।
नाम तेरो बड़ा है जग में करुणा करके मम कष्ट निवारो।3।
तनक्रोध बढ्यो मनबोध गयो, अपमान भले सहि जाय हजारो।
जाति निरादर होई जहाँ तहँ जीवन धारन को धिक्कारो।
देह हमार है दक्षके अंश से जीवन ताकि सो मैं तजि डारो।
नाम तेरो बड़ा है जग में करुणा करके मम कष्ट निवारो।4।
अस कहि लाग समाधि लगाय के बैठि भई निश्चय उर धारो।
प्रान अपान को नाभि मिलय उदानहिं वायु कपाल निकारो।
जोग की आग लगी अब ही जरि छार भयो छन में तन सारो।
नाम तेरो बड़ा है जग में करुणा करके मम कष्ट निवारो।5।
हाहाकार सुन्यो गण शंभु तो जग विध्वंस सबै करि डारो।
जग्य विध्वंसि देखि मुनि भृगु मंत्र रक्षक से सब यज्ञ सम्हारो।
वीरभद्र करि कोप गये और दक्ष को दंड कठिन दै डारो।
नाम तेरो बड़ा है जग में करुणा करके मम कष्ट निवारो।6।
दुखकारन सतीवश कांधे पे डार के विचरत है शिवजगत मंझारो।

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

काज रुक्यो तब देव गये और श्रीपति के ढिंग जाय पुकारो।
विष्णु ने काटि किये शव खण्ड गिर्‌यो जो जहाँ तहँ सिद्धि बिठारो।
नाम तेरो बड़ा है जग में करुणा करके मम कष्ट निवारो।7।
योनि गिर्‌यो कामाख्या थल सों, बन्यो अतिसिद्ध न जाय संभारो।
बास करें सुर तीन दिना जब मासिक धर्म में देवि निहारो।
कहत गोपाल सो सिद्ध है पीठ जो माँगत है मिल जात सो सारो।
नाम तेरो बड़ा है जग में करुणा करके मम कष्ट निवारो।8।

दोहा– लाल होई खल तीन दिन, जब देवि रजस्वला होय।
मज्जन कर नर भव तरहिं, जो ब्रह्म हत्यारा होय।1।
कामाख्या तीरथ सलिल, अहै सुधा सम जान।
कह गोपाल सेवन करुँ, खान, पान, स्नान।2।
भक्ति सहित पढ़िहै सदा, जो अष्टक को मूल।
तिनकी घोर विपत्ति हित, शरण तुम्हारि त्रिशूल।3।
कामाख्या जगदम्बिके, रक्षहु सब परिवार।
भक्त 'गिरि' पर कृपा करि, देहु सबहिं सुख डार।4।

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

। माँ कामाख्या आरती ।

आरती कामाक्षा देवी की। जगत् उधारक सुर देवी की।। आरती....

गावत वेद पुरान कहानी। योनिरूप तुम हो महारानी।।

सुर ब्रह्मादिक आदि बखानी। लहे दरस सब सुख लेवी की।। आरती....

दक्ष सुता जगदम्ब भवानी। सदा शंभु अर्धंग विराजिनी।

सकल जगत् को तारन करनी। जै हो मातु सिद्धि देवी की।। आरती....

तीन नयन कर डमरु विराजे। टीको गोरोचन को साजे।

तीनों लोक रूप से लाजे। जै हो मातु! लोक सेवी की।। आरती....

रक्त पुष्प कंठन वनमाला। केहरि वाहन खंग विशाला।

मातु करे भक्तन प्रतिपाला। सकल असुर जीवन लेवी की।। आरती..

कहैं गोपाल मातु बलिहारी। जाने नहिं महिमा त्रिपुरारी।

सब सत होय जो कह्यो विचारी। जै जै सबहिं करत देवी की।। आरती....

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

भक्तवत्सल भगवती कामाख्या के विषय में सत्य घटना– एक ब्राह्मण शूद्र के कर्जदार थे। वह अपना ऋण चुकाने में असमर्थ थे। एक दिन शूद्र ने कहा कि कर्ज के बदले में अपनी कन्या मुझे दे दो। ब्राह्मण ने शूद्र से कुछ दिनों का समय मांगा। ब्राह्मण ने माँ कामाख्या के यहाँ जाकर प्रार्थना की। तब देवी की आज्ञा हुई कि उस शूद्र से कहना कि अमुक मंगलवार को कन्या आकर ले जाये। मैं उस दिन वहाँ आकर कन्या का उद्धार करूंगी। ब्राह्मण ने शूद्र से ऐसा ही कहा। निर्धारित समय जब शूद्र कन्या लेने के लिये आया तब वहाँ अनेंको चीलें प्रकट हो गयीं, जिन्होंने उस शूद्र तथा उसके दल को इतना तंग किया कि वे अपनी जान बचाकर वहाँ से भाग गये। उस कन्या को शरीर से देवी ने ले लिया और वह अदृश्य हो गयी। यह बहुत प्रसिद्ध घटना है और उस प्रान्त के सब लोग इस घटना को भली भांति जानते हैं। जिला पुर्निया के कामाक्षा–स्थान की यह घटना है। उक्त स्थान पुर्निया से दक्षिण और काठगोला (बी0 एन0 डब्लयू0 रेलवे स्टेशन) से उत्तर है। वहाँ एक संस्कृत पाठशाला भी है।

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

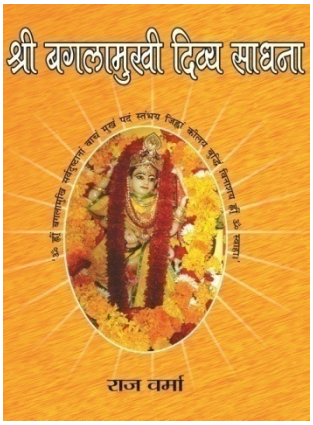

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413